

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

- 2 मैं पेमा तामंग...
- 5 दो भाई
- 6 दुनिया के रंग हज़ार
- 8 वो मनहूस दिन
- 10 सीरिज़ हारी, पर दिल जीता
- 12 शीशा ही तो है फोड़ा
- 13 मेरा पन्ना
- 14 धुन सूर्यग्रहण देखने की
- 18 डांसिंग एट दी लुव
- 20 प्रिंटेड रेनबो
- 22 सुन्दर कौन है?
- 26 दादागिरी
- 28 गूँज उठी शहनाई
- 32 तुम कभी अल्मोड़ा आए हो?
- 36 कहानी अप्पुकुट्टन की...

एक बार चाँद...

बादल घने काले हो गए। तेज़ आँधी चलने लगी और पेड़ गिरने लगे। तालाब में पानी भर गया। झुग्गी में भी पानी भर गया।

महल में भी पानी भरने वाला था। राजा ने सोचा, “ये पानी कहाँ जा रहा है?” उसने बाहर जाकर देखा तो बहुत तेज़ बारिश हो रही थी।

राजा ने सोचा, “पानी रोक दूँ।” पर वो किसी के बस में नहीं था। वो डरकर महल के अन्दर छुप गया। रानी से कहा, “बाहर मत जाना।”

तभी एक कौवा उड़कर आया और राजा से बोला, “मुझे कहीं छुपा लो। मुझे ठण्ड लग रही है।” राजा उसे भगाने लगा।

यह देखकर रानी ने कहा, “कौवे तुम मेरे पास आओ। मेरी गोद में सो जाओ।” यह सब चाँद देख रहा था। उसे अच्छा लगा कि रानी ने कौवे को बुलाया और मदद की। चाँद बहुत खुश हो गया और थोड़ी देर बाद बारिश बन्द हो गई।

चित्र: सिद्धार्थ

—मुस्कान, चौथी, भोपाल



इस अंक में



32 संस्कृत, अँग्रेज़ी और गणित मुझे बिलकुल अच्छे नहीं लगते हैं। पता नहीं ये किसने बना दिए।



12 छक्का चला गया तो मेरी भी क्या खता है?

बस, शहनाई का प्याला मन्दिर की ओर कर दिया और दोने में रोज़ पेड़ा-प्रसाद भी मिल जाया करता था।

28



6 शुक्र है कि हिरण आदि जैसे चराकू जीव हैं जो घास खाते हैं और हिरण जैसे जानवरों पर नियंत्रण के लिए शेर हैं।



राजा ने सोचा हाथी तुले न तुले कम से कम इस बच्ची के हिम्मत और विश्वास को तो दाद मिलनी ही चाहिए।



22

हम किसी स्त्री की सुन्दरता की परवाह ही क्यों करते हैं?



चाय का प्याला लेकर लाला ने उसकी तरफ खींसे निपोरी। यह उसके मुस्कुराने का तरीका था।

महिला दिवस मुबारक हो!



8

एस.आई.जी./आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

एकलव्य

ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल, म.प्र. 462 016
फोन: (0755) 2671017, 2550976
फैक्स: (0755) 2551108
chakmak@eklavya.in
circulation@eklavya.in
www.eklavya.in

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक
सहायक सम्पादक
कविता तिवारी
सम्पादकीय सलाहकार
रेक्स डी रोज़ारियो
तेजी प्रोवर

: आवरण :
तापोशी घोषाल

वितरण
विजय झोपाटे
सहयोग
मिहिर
कनक
प्रभात
कमलेश यादव

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

सदस्यता शुल्क
एक प्रति: 20.00
वार्षिक: 200.00 (व्यक्तिगत)
300.00 (संस्थागत)
तीन साल: 500.00 (व्यक्तिगत)
700.00 (संस्थागत)
आजीवन: 3000.00 (व्यक्तिगत)
4000.00 (संस्थागत)

सभी डाक खर्च हम देंगे।
चन्दा (एकलव्य के नाम से बने)
मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं।
भोपाल के बाहर के चैक में
80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।